

डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 25, इसराइल का भविष्य

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 25 है, इसराइल का भविष्य।

हमने अपनी पिछली बातचीत योशियाह और मिस्रियों के हाथों उसकी मृत्यु के साथ समाप्त की।

उस समय मिस्र के लोग नियंत्रण लेते हैं और यह स्थापित करते हैं कि यहूदा में कौन शासन करने जा रहा है, लेकिन मिस्र का नियंत्रण थोड़े समय के लिए ही रहता है क्योंकि बेबीलोन के लोग ही उठकर सत्ता में आने वाले हैं और यरूशलेम के भाग्य का निर्धारण करने वाले हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यिर्मयाह को जब बुलाया गया था, और हम मानते हैं कि यह मंदिर में कानून की खोज से पहले की बात होगी, तो भगवान ने उसे बताया था कि उसका मिशन उखाड़ने, गिराने और नष्ट करने का संदेश देना था।

दूसरे शब्दों में, न्याय आने वाला था। लेकिन यिर्मयाह की भविष्यवाणी का एक और आयाम था, और वह यह था कि एक नई वाचा है और आशा है। अब, मुझे लगता है कि इतिहास यिर्मयाह के दर्शन के बहुत अनुरूप है।

इसलिए, मुझे लगता है कि इतिहास में, हमारे पास यहूदा के राज्य का दुखद अंत नहीं है, बल्कि पूरे इस्राएल के भविष्य के बारे में सवाल है। इतिहासकार अब इन घटनाओं के 100 साल बाद रहता है - ठीक है, यरूशलेम के पतन की घटनाओं के 200 साल बाद।

और यहाँ वे हैं, एक छोटा सा समुदाय, और वे मंदिर के चारों ओर हैं। वे किसी भी मायने में एक राजनीतिक राज्य या राष्ट्र नहीं हैं, बल्कि वे ईश्वर के राष्ट्र हैं। और इतिहासकार उन्हें ईश्वर के राज्य के रूप में देखता है।

तो, अगर वे यही हैं, तो सवाल भविष्य के बारे में है, जिसका वर्णन इतिहासकार ने करने की कोशिश नहीं की है। मुझे लगता है कि वह शायद इस तरह से एक उचित युगांतशास्त्री है। भविष्य के बारे में बहुत ज़्यादा विवरण नहीं है, बस हम जानते हैं कि परमेश्वर का राज्य आने वाला है और परमेश्वर अपनी सृष्टि को पुनर्स्थापित करने जा रहा है और अपनी सृष्टि को उस तरह से बर्बाद करने जा रहा है जैसा उसने इरादा किया था।

और इतिहासकार हमें यह बताना चाहता है कि हम इसका हिस्सा बन सकते हैं। यह उनके युगांतशास्त्र की बारीकियों की सीमा है। और मुझे लगता है कि हमें कभी-कभी युगांतशास्त्र के बारे में अपनी समझ और अटकलों को उसी सामान्य स्तर तक सीमित रखना चाहिए।

लेकिन किसी भी मामले में, इतिहासकार हमें यहूदा के अंतिम राजाओं के बारे में बताता है। योशियाह के बाद, यहूदा का राज्य एक अधीनस्थ जागीरदार राज्य के रूप में जीवित रहा। इनमें से कोई भी राजा स्वतंत्र नहीं है।

वे सभी या तो मिस्र को कर दे रहे हैं और फिर ज़्यादातर बेबीलोन को। और फिर, हर बार जब वे विरोध करते हैं या किसी अन्य गठबंधन में शामिल होते हैं, तो परिणाम यह होता है कि उन्हें दंडित किया जाता है। और इसलिए, अंतिम सजा राष्ट्र का अंत है।

योशियाह की मृत्यु के बाद पहला राजा उसका बेटा यहोआहाज है, जिसे देश के लोगों ने नियुक्त किया है। लेकिन यह मिस्रियों को बहुत संतोषजनक नहीं लगता। वे यरूशलेम में किसी और की नियुक्ति नहीं चाहते।

वे वहां अपना राजा चाहते हैं। इसलिए मिस्रियों ने उसे पदच्युत कर दिया और कर वसूला, और उन्होंने उसके छोटे भाई एलियाकीम को अपने अधीन कर लिया और उसे एक जागीरदार शासक बना दिया और बेशक, उसका नाम भी बदल दिया। उसने लगभग 11 साल तक शासन किया और उसे निर्वासित कर दिया गया।

और उसका बेटा यहोयाकीन बेबीलोन में निर्वासित हो जाता है। बेबीलोनियों ने योशियाह के दूसरे बेटे को सिंहासन पर बिठाया, जिसका अंतिम नाम सिदकियाह है। और सिदकियाह के शासन में ही हमें बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम की भयानक घेराबंदी और सिदकियाह के परिवार का भयानक अंत देखने को मिलता है, जब बेबीलोनियों द्वारा उनका पीछा किया जाता है और उन्हें मार दिया जाता है, ये सभी चीजें सिदकियाह की मौजूदगी में की जाती हैं।

यह युद्ध की भयावहता के बारे में है। लेकिन इतिहासकार के लिए, इस बात पर जोर दिया गया है कि राष्ट्र विश्वासघाती था, जिसका अर्थ है कि उन्होंने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया है। यह सिर्फ यह कहने का दूसरा तरीका नहीं है कि उन्होंने पाप किया क्योंकि असफलता और पाप एक तरह की चीज़ है।

यह विश्वास की विफलता है। यह भरोसे की विफलता है जो बहुत महत्वपूर्ण है। यहूदा के अंतिम राजाओं ने कभी भी उस भरोसे को प्रकट नहीं किया था और हम इसे विशेष रूप से यिर्मयाह में देखते हैं।

हम इसे खास तौर पर यिर्मयाह के साथ किए गए व्यवहार और यरूशलेम के विनाश के साथ उसके जीवन के अंत और अंततः मिस्र में निर्वासित होने के तरीके से देखते हैं। लेकिन यिर्मयाह का अंत आशा के बिना नहीं होता। उसी तरह, इतिहासकार हमें आशा देना चाहता है।

इसलिए, यिर्मयाह, अध्याय 25 में हमें बताता है कि 70 वर्षों के बाद, एक पुनर्स्थापना होने जा रही है। और यिर्मयाह एक नई वाचा के बारे में बात करता है जो परमेश्वर अपने लोगों के साथ करने जा रहा है। इतिहासकार इस सब के बारे में एक धर्मशास्त्र के साथ निष्कर्ष निकालता है।

यह सब्ब का धर्मशास्त्र है। मूसा के टोरा में लेवितस की पुस्तक में घोषणा की गई थी कि भूमि को हर सातवें वर्ष विश्राम मिलना चाहिए। लेकिन पूरे समय में जब से इस्राएली भूमि पर रहते आए हैं, जो लगभग 490 वर्ष था, उन्होंने कभी भी सब्ब का पालन उस तरह से नहीं किया जैसा कि मूसा के निर्देश के अनुसार उन्हें करना चाहिए था।

तो, बेबीलोन के निर्वासन के 70 वर्ष एक तरह का धार्मिक कथन है। परमेश्वर ने उन सभी वर्षों के लिए भूमि को आराम दिया, जब इस्राएलियों ने 490 वर्षों के दौरान इसकी उपेक्षा की थी। यह इतिहासकार का स्पष्ट कथन है, लेकिन उसने इसे गढ़ा नहीं है।

वह इसे लेवितस की पुस्तक से ही प्राप्त करता है। इसलिए, हम 70 वर्षों को अलग-अलग तरीकों से गिन सकते हैं क्योंकि लोगों के निर्वासन में जाने की एक प्रक्रिया थी और लोगों के वापस लौटने की एक प्रक्रिया थी। इसलिए, हम निर्वासन में जाने वाले लोगों की शुरुआत से उस प्रक्रिया को देख सकते हैं।

उनमें से पहला दानियेल है, और यह वास्तव में योशियाह की मृत्यु के साथ लगभग 609 से शुरू होता है। यह साइरस के आदेश के साथ समाप्त होता है, जिसका उल्लेख इतिहासकार ने अपनी पुस्तक के अंत में वर्ष 539 में किया है। या, हम मंदिर के विनाश से लेकर नींव रखने तक के 70 वर्षों की गणना कर सकते हैं, जो कि 586 है, जैसा कि हम एज्रा और नहेम्याह में पाते हैं, जो कि 516 है।

मुख्य बात यह है कि 70, परमेश्वर की वाचा का पालन करने और उसे बनाए रखने में विफलता के परिणामों के बारे में बात करने के लिए प्रतिनिधि संख्या है। यिर्मयाह ने एक नई वाचा के बारे में बात की। मैं इतिहास के बारे में इन विचारों को यह कहकर समाप्त करना चाहता हूँ कि प्रेरित पौलुस के मन में यह नई वाचा और इसकी पुनर्स्थापना किसी भी तरह से उससे अलग नहीं है जिसे इतिहासकार ने समस्त इस्राएल कहा है।

रोमियों की पुस्तक में, पौलुस ने जिन बातों की ओर ध्यान दिया है, उनमें से एक है इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजनाओं के बारे में उसके विचार, रोमियों 9 से 11 में इस्राएल के लिए परमेश्वर का भविष्य। तो, यहाँ पौलुस का पूरा तर्क यह सवाल है: यदि सभी अन्यजाति सुसमाचार की ओर मुड़ गए हैं, तो क्या परमेश्वर ने सभी इस्राएल को भूला दिया है? क्या परमेश्वर ने अपने लोगों को भूला दिया है? जिसका उत्तर, संक्षेप में, यह है, ठीक है, ऐसा कभी न हो। मैं एक इस्राएली हूँ।

अब, यहाँ मुख्य प्रश्न यह है कि हम इसराइल को कैसे परिभाषित करते हैं? हम इसराइल के बारे में बात करते हैं और इस शब्द का इस्तेमाल ऐसे करते हैं जैसे कि हम जानते हैं कि हमारा क्या मतलब है, लेकिन असलियत यह है कि अगर आप धर्मग्रंथों को देखें, तो इसराइल शब्द के कई अलग-अलग अर्थ हैं जिन्हें हम संदर्भ कह सकते हैं। यानी, इसमें कई अलग-अलग विशिष्ट संस्थाएँ हैं जिनका यह संदर्भ देता है।

जैसा कि हम जानते हैं, शुरू में, इस्राएल का मतलब सिर्फ याकूब था। इतिहासकार ने यह बात इसलिए कही है क्योंकि शुरू से ही वह कहता है कि अब्राहम के बेटे इसहाक, एसाव और इस्राएल थे, याकूब नहीं। इसलिए, यह इस्राएल के संदर्भों में से एक है।

लेकिन इज़राइल का एक और संदर्भ उत्तरी राज्य है जो दक्षिण में यहूदा के राज्य के विपरीत है। इसलिए, यदि आप राजाओं की पुस्तक पढ़ रहे हैं और आप इज़राइल नाम पढ़ते हैं, तो आपको पता होना चाहिए, हाँ, लेकिन वहाँ इज़राइल का मतलब यरूशलेम नहीं है। इसका मतलब केवल एग्रेम और मनश्शे और वे सभी क्षेत्र हैं जिनकी राजधानी सामरिया थी।

तो, यह इज़राइल का एक और नाम है। वास्तव में, यदि आप विस्तार से पढ़ना शुरू करते हैं, तो आप इज़राइल के संदर्भों को गुणा करना शुरू कर देते हैं। लेकिन इतिहासकार ने पूरे इज़राइल का वर्णन इनमें से किसी भी शब्द में नहीं किया है।

वह इसे वादे के संदर्भ में परिभाषित करता है। वह इसे जातीयता के संदर्भ में परिभाषित करता है। और वह इसे उन लोगों के संदर्भ में परिभाषित करता है जिनके माध्यम से परमेश्वर अपना राज्य लाने जा रहा है।

अब, मेरे लिए यह बहुत दिलचस्प है कि जब पॉल रोमियों 9 से 11 में इज़राइल शब्द का उपयोग करता है, तो वह वास्तव में इज़राइल के विचार का पूरी तरह से पालन करता है जिस तरह से हम इसे इतिहास में पाते हैं। यह इज़राइल है। और हाँ, इस इज़राइल का एक भविष्य है।

इसलिए, उस भविष्य को समझने के लिए, हमें सुसमाचार की प्रकृति को समझने की आवश्यकता है। और यहाँ सुसमाचार की प्रकृति, पौलुस व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का अनुसरण करता है। व्यवस्थाविवरण 29 में, हम देखते हैं कि कैसे इस्राएल अपने विश्वास में विफलता और अपनी अवज्ञा के कारण वाचा के अभिशाप के अधीन आता है।

लेकिन व्यवस्थाविवरण के अध्याय 30 में, परमेश्वर उन्हें कैसे पुनर्स्थापित करता है और अपना वचन उसके पास लाता है और उनके पास उसका सत्य है। पौलुस इस तर्क का अनुसरण करते हुए कहता है कि यही वह प्रक्रिया है जो घटित हो रही है। और वह इसे इस्राएल पर लागू करता है जैसा कि वह अपने समय में जानता है।

परमेश्वर सुसमाचार के माध्यम से इस्राएल को अपने पास लाने जा रहा है। अध्याय 11 में, वह बताता है कि यह कैसे होने जा रहा है, कि अन्यजाति वृक्ष की जड़ नहीं हैं।

उन्हें ग्राफ्ट किया गया है। और अगर उन्हें ग्राफ्ट किया जा सकता है, तो निश्चित रूप से मूल जड़ अभी भी वहाँ है। और वह इज़राइल और वह वादा अभी भी वहाँ है।

और इसलिए, पॉल के लिए, पूरा इस्राएल, और इससे उसका मतलब है विश्वास का इस्राएल। उसका मतलब किसी राज्य से नहीं है। उसका मतलब किसी राजनीतिक इकाई से नहीं है।

उनका मतलब किसी आनुवंशिक वंश से नहीं है। जैसा कि हमने इतिहास में देखा है, इज़राइल कभी भी किसी विशिष्ट आनुवंशिक वंश तक सीमित नहीं था। न ही इतिहास में कभी भी इज़राइल को एक राजनीतिक राज्य के रूप में परिभाषित किया गया है।

नहीं, बल्कि यह एक जनता है। यह एक जनता है। और समय-समय पर, उनके पास एक राजा होता है।

और समय-समय पर, वे एक राज्य के रूप में कार्य करते हैं। लेकिन सारा इस्राएल सभी लोगों का है, इसलिए अपने समय पर, वह अभी भी पूरे इस्राएल के बारे में विश्वास के लोगों के रूप में बात कर सकता है। जिन्हें परमेश्वर ने छुड़ाया है।

और आप जानते हैं कि क्योंकि वे पूजा कर रहे हैं। और वे मंदिर के चारों ओर पूजा कर रहे हैं। यह मुझे इतिहास में ईसाइयों के लिए महत्वपूर्ण एक समापन बिंदु पर ले जाता है।

हमें परमेश्वर के राज्य को कैसे प्रकट करना चाहिए? हम प्रभु की प्रार्थना करते हैं। हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, आपका नाम पवित्र माना जाए। आपका राज्य आए।

आपकी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो, जैसे स्वर्ग में पूरी होती है। और परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो, जैसे स्वर्ग में पूरी होती है। जब तक हम, उसके राज्य के नागरिक होने के नाते, उसके उद्देश्य और उसकी इच्छा के अनुसार जीना जानते हैं।

और परमेश्वर का उद्देश्य और उसकी इच्छा क्या है? खैर, कि हम उसकी महिमा प्रकट करें। कि हम उसका प्रतिनिधित्व करें। और यह कैसे होता है? इतिहासकार स्पष्ट है।

यह हमारी स्तुति देने में, हमारी सामूहिक स्तुति देने में घटित होता है, और स्पष्ट रूप से कहें तो यह चर्च में घटित होता है, जहां परमेश्वर के लोग एकत्र होते हैं।

यह धारणा कि ईसाइयों को चर्च की ज़रूरत नहीं है, पवित्र शास्त्र में बताई गई हर बात के बिलकुल विपरीत है। और यह निश्चित रूप से परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने की अवधारणा के विपरीत है जैसा कि हम इतिहास में देखते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम कर सकते हैं वह है अपनी प्रशंसा दिखाना।

हम अपनी आस्था दिखाने और जीवन के बारे में अपनी मान्यताओं को स्वीकार करने के लिए आराधना में एकत्रित होते हैं।

हाँ, इसमें संगीत और गायन शामिल है। दरअसल, मैं एक उपदेशक हूँ, और मुझे लगता है कि अच्छे उपदेश ही उपासना का मूल हैं।

और यही बात हर किसी को आकर्षित करती है। लेकिन आप जानते हैं, क्रॉनिकलर बड़े उपदेशों और अच्छे उपदेशों पर इतना अधिक ध्यान नहीं देता। उसके पास बहुत सारे उपदेश हैं।

वे भविष्यवक्ताओं से आते हैं। वे अलग-अलग समय पर आते हैं। उपदेश का अपना स्थान है।

लेकिन जिस तरह से पूजा व्यक्त की जाती है, उसकी सराहना न करें। संगीत के माध्यम से। इन सभी अनुष्ठानों और गतिविधियों के माध्यम से जो हम करते हैं।

क्योंकि वे परमेश्वर में हमारे विश्वास को दर्शाते हैं और वे उसके राज्य की गवाही हैं। और वह राज्य, इतिहासकार कहता है, वह राज्य हमारा है। यही वह राज्य है जो आने वाला है।

और इसलिए, इतिहासकार के अनुसार, आशा के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। अगर हम ही हैं जो परमेश्वर के मंदिर के चारों ओर इकट्ठा हो रहे हैं। बेशक, यीशु ने कहा कि वह मंदिर था।

इब्रानियों की पुस्तक यीशु को मंदिर के रूप में प्रस्तुत करती है। इसलिए, ईसाई होने के नाते, बेशक, हम यीशु के इर्द-गिर्द इकट्ठा होते हैं। और इसी तरह हम अपनी आराधना दिखाते हैं।

और पॉल कहते हैं, वह पूरा इस्राएल है। इसमें वे लोग भी शामिल होंगे जिनके बारे में इतिहासकार बात कर रहा था। वे यहाँ हैं।

वे मौजूद हैं। और वे इस महान छुटकारे का हिस्सा बनेंगे जिसे परमेश्वर ने मिस्र में शुरू किया था। और जिसे यीशु ने कहा था कि क्रूस पर उनके कार्य में पूरा हुआ।

और इसे छुटकारे के चिन्हों को लेकर प्रदर्शित किया। फसल। रोटी और शराब।

और कह रहा है, यह अब मुझे मंदिर के रूप में दर्शाता है। मेरा शरीर। नई वाचा।

यह परमेश्वर की अपनी दुनिया के लिए योजना का उद्धार होगा। हम सभी के लिए और पूरे इस्राएल के लिए। इतिहासकार का यही दृष्टिकोण है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोंकेल हैं जो इतिहास की पुस्तकों पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 25 है, इज़राइल का भविष्य।